



भारतीय सिनेमा  
के  
**100**  
वर्ष YEARS  
of  
*Indian Cinema*

भारतीय सिनेमा

के  
100

वर्ष YEARS

of  
*Indian Cinema*





# 100 Years Of Indian Cinema

On 3<sup>rd</sup> May, 1913, when Dada Saheb Phalke, the father of Indian Cinema, released India's first full length feature film Raja Harishchandra, it held the viewers in a thrall. As the next one hundred years would prove, what he brought to India that day was not just a medium of mass entertainment, but also a powerful tool that would shape social engagement, culture and behaviour in this diverse country.

The release of India's first talkie 'Alam Ara', produced by Ardeshir Irani, was the next landmark event in the history of Indian cinema. The movie which released on 14<sup>th</sup> March, 1931 at the Majestic Cinema, Mumbai starring Zubeida, Master Vittal and Prithvi Raj Kapoor was so popular that police had to be called in to control the crowd. The commercial success of Alam Ara brought an end to the silent era. The talkies changed the face of Indian cinema. Apart from looks, the actors were now required to have a commanding voice and singing skills, as music became a defining element of Indian cinema. The first talkie film in Bengali 'Jumai Shasthi', Telugu 'Bhakta Prahlad' and Tamil 'Kalidas' were also released in the same year.

The 1940s was a tumultuous decade for the world and for India, which was ravaged by war and drastic political changes, Indian cinema, however, made some firm strides during this period. The 40s and 50s formed the golden era of film music. Shankar Jaikishan, O.P.Nayyar, Madan Mohan, C. Ramachandra, Salil Chowdhury, Naushad and S.D.Burman – all with their distinct styles – produced some of the most unforgettable melodies. The 50s also marked a watershed in the matter of themes, with social issues being taken up in movies by enlightened film makers to educate the masses.

The new trend continued into the 60s, with filmmakers like Satyajit Ray, Ritwik Ghatak, Guru Dutt,

Bimal Roy, Mehboob Khan, K. Asif, Raj Kapoor, K.V.Reddy, L.V.Prasad and Ramu Kariat directing movies like 'Pyasa', 'Do Bigha Zamin', 'Mughal-e-Azam', 'Pather Panchali', 'Mother India', 'Maya Bazaar' and 'Chemmeen', and going on to win national and international acclaim.

The 70s saw the birth of a genre, masala movie, in Indian cinema which promised instant attraction and wholesome entertainment. During this era, Parallel Cinema, with higher aesthetic values than commercial cinema, emerged as a movement. Parallel Cinema was also instrumental in the emergence of women filmmakers like Aparna Sen, Prema Karanth, Meera Nayar, Sai Paranjape, Kalpana Lajmi and others in the 80s.

The 90s brought with it a mixed bag of films - romantic thrillers, action and comedy. Introduction of technology with Dolby digital sound effects, advanced special effects and modern choreography led to a striking upgrade in quality on the silver screen. Simultaneously, investment from corporate sector also started flowing in along with fine scripts and improved production quality.

Indian cinema has found global appeal at the turn of the 21<sup>st</sup> century. It has reached out to the international audiences through commercial releases and regular screenings at major international film festivals.

Nothing captures the essence of popular culture in present day India better than our films. Department of Posts is happy to be a part of the century-long journey of Indian cinema by releasing six Miniature Sheets commemorating the contribution of fifty iconic personalities of Indian Cinema. The first two Miniature Sheets with nine stamps each depict some Dada Saheb Phalke awardees whereas rest with eight stamps each depict the personalities from various fields of cinema.

## Credits

Text : Based on the material furnished by Information & Broadcasting Ministry  
Stamp & FDC : Kamleshwar Singh  
Cancellation : Nenu Gupta



# भारतीय सिनेमा के 100 वर्ष

भारतीय सिनेमा के जनक दादा साहेब फाल्के ने 3 मई, 1913 को जब भारत की पहली पूर्ण फीचर फिल्म राजा हरिश्चन्द्र जारी की तो इसने दर्शकों को मंत्र-मुग्ध कर दिया। जैसा कि अगले सौ वर्ष साबित करते हैं, उन्होंने उस दिन भारत में आम जनता के लिए मनोरंजन के माध्यम का ही सूत्रपात नहीं किया बल्कि एक सशक्त माध्यम भी प्रदान किया जो इस विविधता पूर्ण देश में सामाजिक सरोकार, संस्कृति और आचरण को दिशा प्रदान करने वाला था।

भारतीय सिनेमा के इतिहास में अर्देशीर ईरानी द्वारा निर्मित भारत की पहली बोलती फिल्म 'आलम आरा' का प्रदर्शन अगली उल्लेखनीय घटना थी। जुबैदा, मास्टर विट्टल और पृथ्वीराज कपूर द्वारा अभिनीत फिल्म जो 14 मार्च, 1931 को मैजेस्टिक सिनेमा, मुम्बई में प्रदर्शित की गई थी, इतनी लोकप्रिय हुई कि भीड़ को नियंत्रित करने के लिए पुलिस बुलानी पड़ी। आलम आरा की व्यावसायिक सफलता ने फिल्मों के मूक युग का समापन कर दिया। बोलती फिल्मों ने भारतीय सिनेमा के परिदृश्य को बदल दिया। अभिनेताओं की खूबसूरती के अलावा उनकी बुलंद आवाज और गायन कुशलता की भी आवश्यकता पड़ी क्योंकि संगीत भारतीय सिनेमा का उल्लेखनीय कारक बन गया। उसी वर्ष बंगाली में 'जुमई षष्ठी', तेलुगु में 'भक्त प्रह्लाद' और तमिल में 'कालीदास' पहली बोलती फिल्मों का भी प्रदर्शन किया गया।

विश्व तथा भारत के लिए 1940 का दशक युद्ध तथा क्रांतिकारी राजनीतिक परिवर्तन के कारण अशांतिपूर्ण दशक था किन्तु इस अवधि के दौरान भारतीय सिनेमा ने अच्छी प्रगति हासिल की। 40 तथा 50 का दशक फिल्म संगीत का स्वर्णिम युग था। शंकर जयकिशन, ओ. पी. नच्चर, मदन मोहन, सी. रामचन्द्र, सलिल चौधरी, नौशाद और एस. डी. बर्मन - सभी ने अपनी विशिष्ट शैली में अविस्मरणीय मधुर संगीत की रचना की। 50 का दशक भी विषय के मामले में उल्लेखनीय था जब लोगों को शिक्षित करने के लिए जागरूक फिल्म निर्माताओं द्वारा सामाजिक विषयों पर फिल्मों का निर्माण किया गया। यह नई प्रवृत्ति 60 के दशक में जारी रही जब सत्यजीत रे, ऋत्विक् घटक, गुरुदत्त, बिमल राय, महबूब खान, के. आसिफ, राज कपूर, के. वी. रेड्डी, एल. वी. प्रसाद और रामू करियात जैसे फिल्म निर्माताओं ने 'प्यासा', 'दो बीघा जमीन', 'मुगले आज़म', 'पथेर पाँचाली', 'मदर इंडिया', 'माया बाजार' और 'चम्पीन' जैसी फिल्मों का निर्देशन किया और राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय ख्याति हासिल की।

70 के दशक में भारतीय सिनेमा में मसाला फिल्मों की धारा का जन्म हुआ जिसमें अत्यधिक आकर्षण और पूर्ण मनोरंजन था। इस अवधि के दौरान व्यावसायिक सिनेमा की तुलना

में उच्च सौंदर्यपरक मूल्य वाले समानांतर सिनेमा का आंदोलन के रूप में प्रादुर्भाव हुआ। 80 के दशक में समानांतर सिनेमा के दौर में ही अपर्णा सेन, प्रेमा कारंथ, मीरा नायर, सई परांजपे, कल्पना लाजमी और अन्य महिला फिल्म निर्माताओं का उदय हुआ।

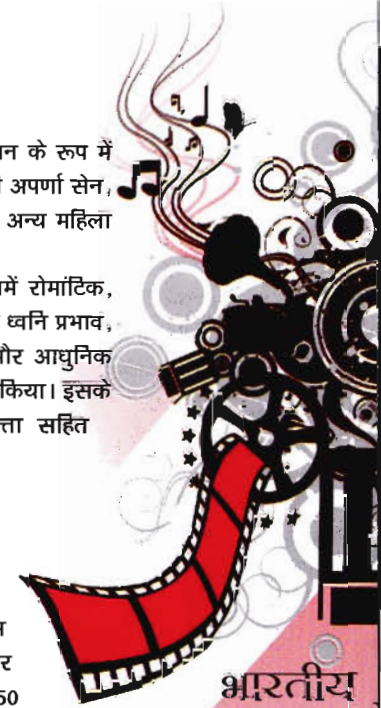
90 का दशक मिश्रित फिल्मों का दौर रहा जिसमें रोमांटिक, एक्शन और कॉमेडी फिल्मों का निर्माण हुआ। डॉलबी डिजिटल ध्वनि प्रभाव, उन्नत विशिष्ट प्रभाव के साथ नई तकनीक की शुरुआत और आधुनिक कोरियोग्राफी ने रुपहले पर्दे पर गुणवत्ता में उल्लेखनीय सुधार किया। इसके साथ-साथ अच्छी पटकथाओं और बेहतर उत्पादन गुणवत्ता सहित कॉरपोरेट जगत से भी निवेश प्राप्त होने लगा।

भारतीय सिनेमा को 21वीं शताब्दी के मोड़ पर वैश्विक पहचान मिलने लगी। प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों और व्यावसायिक प्रदर्शनों के अवसर पर नियमित प्रदर्शनों के जरिए इसने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाई है।

भारतीय फिल्मों की तुलना में अन्य कोई माध्यम वर्तमान भारत की लोकप्रिय संस्कृति की भावना का बेहतर प्रतिनिधित्व नहीं करता है। डाक विभाग भारतीय सिनेमा की 50 प्रमुख हस्तियों के योगदान की स्मृति में 6 मिनिएचर शीट को जारी करके भारतीय सिनेमा के 100 वर्ष के सफर का हिस्सा बनकर प्रसन्नता का अनुभव करता है। 9 डाक टिकटों वाली प्रथम 2 मिनिएचर शीट में प्रत्येक में दादा साहेब फाल्के पुरस्कार विजेताओं को चित्रित किया गया है जबकि शेष 8 डाक टिकटों वाली मिनिएचर शीट में प्रत्येक पर सिनेमा के विभिन्न क्षेत्रों की हस्तियों को चित्रित किया गया है।

## आभार

मूलपाठ : सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री पर आधारित  
डाक टिकट / प्रथम दिवस आवरण : कमलेश्वर सिंह  
विरुपण : नीनू गुप्ता



भारतीय



वर्ष

Indian

100 Years of  
 Fashion Design

100 Years of  
 Fashion Design

100 Years  
 of Fashion Design

100 Years  
 of Fashion Design

100 Years of Fashion Design  
 100 Years of Fashion Design

100 Years of  
 Fashion Design

100 Years  
 of Fashion Design

100 Years  
 of Fashion Design

100 Years of  
 Fashion Design

100 Years  
 of Fashion Design

100 Years  
 of Fashion Design

100 Years  
 of Fashion Design

100 Years of  
 Fashion Design

100 Years  
 of Fashion Design

100 Years of Fashion Design  
 100 Years of Fashion Design



100 Years of Fashion Design  
 100 Years of Fashion Design

100 Years of Fashion Design  
 100 Years of Fashion Design